Dr. Madan Paswan, History.

Class: B.A. Part-I (Hons.) P-Ist

Topic: प्राचीन भारत के आधुनिक इतिहासकार.

Lecture No. 07

Date : 05.11.2020

Continue Lecture...

(1.)

औरों ने यह साबित करने की कोशिश की कि इन विशेषताओं के बावजूद, जाति व्यवस्था मूल रूप से यूरोप के पूर्व-औद्योगिक और प्राचीन समाज में श्रम विभाजन पर आधारित वर्ग-व्यवस्था से भिन्न नहीं थी।

महाराष्ट्र में, रामकृष्ण गोपाल भंडारकर (1837-1925) और विश्वनाथ काशीनाथ राजवाड़े (1869-1926) दो ऐसे समर्पित इतिहासकार उभरे जिन्होंने विभिन्न स्रोतों को एक साथ अलग-अलग करते हुए भारत के सामाजिक और राजनीतिक इतिहास की पुनर्रचना की।

आर० जी० भंडारकर ने दक्कन के 7 वाहन के राजनीतिक इतिहास और वैष्णव एवं अन्य मतों के इतिहास की पुनर्रचना की। एक महान सामाजिक सुधारक के रूप में उन्होंने अपने अनुसंधान के माध्यम से विधवा पुनर्विवाह, जाति व्यवस्था और बाल विवाह जैसी बुराइयों की भर्त्सना की।

शोध के लिए पूरे जोश के साथ, वी० के० राजवाड़े ने मराठा इतिहास के स्रोतों और संस्कृत पांडुलिपियों की तलाश में महाराष्ट्र में हरेक गाँव की यात्रा की, अन्ततः उन सारे स्रोतों को 22 खण्डों में प्रकाशित किया गया। जिसमें -

(क) उन्होंने ज्यादा नहीं लिखा, लेकिन वैदिक और अन्य ग्रंथों पर आधारित भारत में विवाह के विकास के चरणों पर उनकी सूक्ष्म अन्तरदृष्टि के कारण 1926 ई० में मराठी में विवाह व्यवस्था पर लिखी गई उनकी किताब एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक दस्तावेज के रूप में जानी गई।

(ख) पांडुरंग वामन काने (1880-1972) जो कि संस्कृत के विद्वान थे, उन्होंने सामाजिक सुधार की ठानी और विद्वता व ज्ञान की परम्परा को जारी रखा।

(ग) 20वीं शताब्दी में 5 खण्डों में प्रकाशित धर्मशास्त्र का इतिहास (History of the Dharmasastra) शीर्षक इनका उल्लेखनीय काम है जो प्राचीन सामाजिक नियमों और प्रथाओं का एक ज्ञान भंडार है। जिसमें हमें प्राचीन भारत में सामाजिक

Conti...

प्रक्रियाओं का अध्ययन मिलता है।

(घ) भारतीय विद्वानों ने यह दिखाने के लिए राजनीति और राजनीतिक इतिहास का गंभीरता से अध्ययन किया कि भारत का अपना राजनीतिक इतिहास था और उसे चलाने वाले भारतीय भी निपुण थे।

Continue ...